

ASHA ARCHIVES

आशा भोंसले काथि

1176

ASHA ARCHIVES



१ ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री नवग्रह देवताये नमः ॥ ॥
श्री कार्तिकीको वाचः ॥ ॥ देव देव महादेव अजिते वंचराचरं
नवग्रहा कथं प्रोक्तं शान्तिमुक्तं कथं भवेत् ॥ ॥ श्री रुद्र वाचः ॥
स्युः पूज्य सदा भक्ता तव प्रीत्य महं सदा ॥ देवा सूर प्रवृद्धं ते रोग
सोक विना सतः ॥ ॥ ॐ पातु द्वादसादित्य सूर्य महं संस्थिता ॥ सर्वा
इह हृदये पातु वराह पलक्षतु ॥ १ ॥ ॐ पातु दशक राचन्द्र मनु

ल संस्थिता ॥ ॥ बोमाकान विन्दुर्देवस्थः सोमसौरित्ति साकर ॥ २ ॥
ॐ पातु मं विष्णु राजी स्वयं मन्दुल संस्थिता ॥ अंगारं तां मवर्चं च रोहि
तां गोमहि स्तुत ॥ ३ ॥ ॐ ॐ पातु अनन्त स्वदशदल स्थिति स्तथा ॥
अग्नि मन्दुल मध्यस्था बोध धर्म पारयणं ॥ ४ ॥ ॐ पातु गुरुवा
च खरु रे पातु या स्थिता ॥ वेद वेदाङ्ग मन्त्रेष्टं सर्व विद्या विसारद
॥ ५ ॥ ॐ पातु सूक्त धातु स्व सर्व कार्य विसारद ॥ मृत संजि विनि

विद्यासर्वसुभक्ततेजसा ॥ ६ ॥ **ॐ** पातु शनैस्त्वरस्वसर्वसञ्जु
विनासिनि ॥ आज्ञाचक्रस्थितादेवि महाकालिस्त्रभंकरी ॥ ७ ॥
ॐ पातुराहुस्वतुर्दंतेघनादेनसेविता ॥ स्मसानभैरवीपातुसर्व
कालनिवारणं ॥ ८ ॥ **ॐ** पातुकेतुनामस्वसर्वाङ्गनागअङ्गिनि ॥
जलोथिपालपकार्यसर्वजीवसनायके ॥ ९ ॥ शतिनवग्रहप्रो
क्तं देवानामविश्वभं ॥ यं यं विष्मयते कामं ग्रहभूतविनाशनं ॥ १० ॥

॥ प्रवारेवेदूर्यस्वमानिके ईन्दुनिलके पूष्पनागकटके क्लृप
प्ररागस्वरावते ॥ ११ ॥ यः पठेत्स्वित्पाठस्वसर्वरोगनिवा
रणं ॥ पूस्तिकं सर्वदेहस्वनवग्रहकिर्तिता ॥ १२ ॥ शतिश्रीरुद्रया
मलेरुद्रकुमारसंवादे नवग्रहकवचसमाप्तं ॥ १३ ॥ शुभम् ॥
शतिशुद्धवाअलुद्धवाममदोषनदियते ॥ सम्वत् १०३४ श्रावण कृ
ष्ण ११ रोज १ स्वचक्रमानसिंकर्माचार्यो याजु शुभम् ॥ १४ ॥ ॥

ASHA ARCHIVES

श्री १०८ श्री

1.176

ASHA ARCHIVES



